

...तो गंभीर रूप ले सकता है अनीमिया

अनीमिया एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें शरीर के अंदर खून की कमी हो जाती है। अगर समय रहते इसका निदान न किया जाए तो यह गंभीर रूप ले सकता है। इसलिए जल्दी है कि आपको अनीमिया, उसके लक्षण व कारणों के बारे में पूरी जानकारी हो। साथ ही यह भी पता हो कि ऐसी कौन-सी धीरे हैं, जिन्हें खाने से अनीमिया को ठीक किया जा सकता है।



अनीमिया के लक्षण

सबसे पहले तो यह जानने की ज़रूरत है कि किन लोगों को अनीमिया आसानी से अपनी गिरजाएँ में ले सकता है। ऐसे लोग जो लंबे समय से किसी बीमारी या इंफेक्शन का शिकायत हैं उन्हें अनीमिया आसानी से हो सकता है। अनीमिया के कुछ प्रकार अनुग्राहिक होते हैं, लेकिन यह खराब डायट और जीवनशैली की वजह से भी हो सकता है। शरीर के इसके लक्षणों की, तो थकान, कमज़ोरी, त्वचा का पीला होना, दिल की घड़कन का असामान्य होना, सांस लेने में तकलीफ, चक्कर आना, सीने में दर्द, हाथों और पैरों का ढंडा होना, सिरदर्द आदि अनीमिया की तरफ इशारा करते हैं। इसके अलावा स्टूल के कलर में बदलाव, कम ब्लड प्रेशर, रिक्न का ढंडा पड़ना, स्लीन का साइज बढ़ना भी अनीमिया के लक्षण हैं।

ये लक्षण भी हैं खतरनाक

सिर, छाती या पैरों में दर्द होना, जीभ में जलन होना, मुँह और गला सूखना, मुँह के कोनों पर छाते हो जाना, बालों का कमज़ोर होकर टूटना, निगलने में तकलीफ होना, स्लीन, नाखून और मसूड़ों का पौला पड़ जाना आदि कुछ ऐसे लक्षण हैं जो अनीमिया के एक

गंभीर रूप की ओर इशारा करते हैं। अगर अनीमिया लगातार बना रहे तो डिप्रेशन का रूप ले सकता है।

अनीमिया के प्रकार और कारण

अनीमिया 3 तरह का होता है - माइल्ड, मॉडरेट और सीवियर। अगर बॉडी में हीमोग्लोबिन 10 से 11 के आसापास हो तो इसे माइल्ड अनीमिया कहते हैं। वही अगर हीमोग्लोबिन 8 से 9 होता है तो इसे मॉडरेट अनीमिया कहते हैं। जबकि सीवियर अनीमिया में हीमोग्लोबिन 8 से कम होता है। यह एक गंभीर स्थिति होती है,



अंजीर खाएं - अनीमिया के लिए अंजीर काफ़ी फायदेमंद माना जाता है। अंजीर में विटामिन बी१२, कैल्शियम, आयरन, फॉफॉरस, पोटेशियम जैसे जरूरी तत्व पाए जाते हैं जो खून की कमी को दूर करते हैं। यह ब्लड प्रेशर को नियंत्रित रखने में भी मददगार है।

टमाटर का सूप पिएं - टमाटर में विटामिन सी भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसके अलावा इसमें बी१२ केरेटिन और विटामिन ई भी पाया जाता है जो आयरन की कमी को दूर करता है। टमाटर को सलाद के अलावा इसका सूप भी सकते हैं।

अंडा खाएं - अंडे में प्रोटीन भरपूर मात्रा में होता है, यह एक अच्छा एंटीऑक्साइट भी है जो शरीर को बीमारियों से बचाकर आयरन की कमी दूर करते हैं। एक बड़े अंडे में 1 ग्राम आयरन होता है जो खून की कमी दूर करता है। अंडे को ब्रेकफस्ट में शामिल कर खून की कमी दूर करें।

आयरन से भरपूर अनार - अनार ऐसा फल है जिसमें विटामिन सी और आयरन भरपूर मात्रा में पाया जाता है। अनार का सेवन करने से शरीर में रक्त का संचार बढ़ता है और यह अनीमिया से लड़ने में भी मदद करता है। इसके अलावा अनार कमज़ोरी और थकान को भी दूर करता है।

फल और सब्जियां ज्यादा खायें - अनीमिया से ग्रस्त लोगों को यह सलाह दी जाती है कि वे फल और हरी सब्जियां ज्यादा खाएं। फल जैसे खेल, तरबूज, सेब, अंगूर, आदि खाने से शरीर में खून तेजी से बढ़ता है और अनीमिया की शिकायत दूर होती है।

अनीमिया के बारे में खास बातें

अनीमिया मुख्य रूप से तीन तरह का होता है, लेकिन सबसे आम आयरन की कमी से होने वाला अनीमिया है। अंकड़ों के मुताबिक, करीब 90 फीसदी लोगों में यही अनीमिया होता है।

कुछ लोग आइस क्यूब बहुत खाते हैं। अगर ऐसा हो तो फिर यह अनीमिया का लक्षण हो सकता है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अनीमिया की एक खास कॉलाइटी भी होती है। अनीमिया मुख्य रूप से आयरन की कमी से होता है और जब शरीर में आयरन कम हो जाता है तो इंफेक्शन पैदा होने का खतरा नहीं होता। ऐसा इसलिए व्योंगिक ज्यादातर बैक्टीरिया अपनी पावर बढ़ाने के लिए आयरन पर निर्भर होते हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, गर्भवती महिलाओं में अनीमिया होने का अत्यधिक खतरा रहता है। दुनियाभर में 40 फीसदी गर्भवती महिलाओं को अनीमिया होता है। वैसे तो गर्भवती महिलाओं में 20 से 30 फीसदी अधिक ब्लड सप्लाई होता है ताकि गर्भ में पल रहे बच्चे को ज्यादा मात्रा में ऑक्सीजन मिले। लेकिन ऐसा हमेशा सभव नहीं हो पाता कि गर्भवती महिलाओं के शरीर में इनी अत्यधिक मात्रा में ब्लड प्रड्यूस हो।



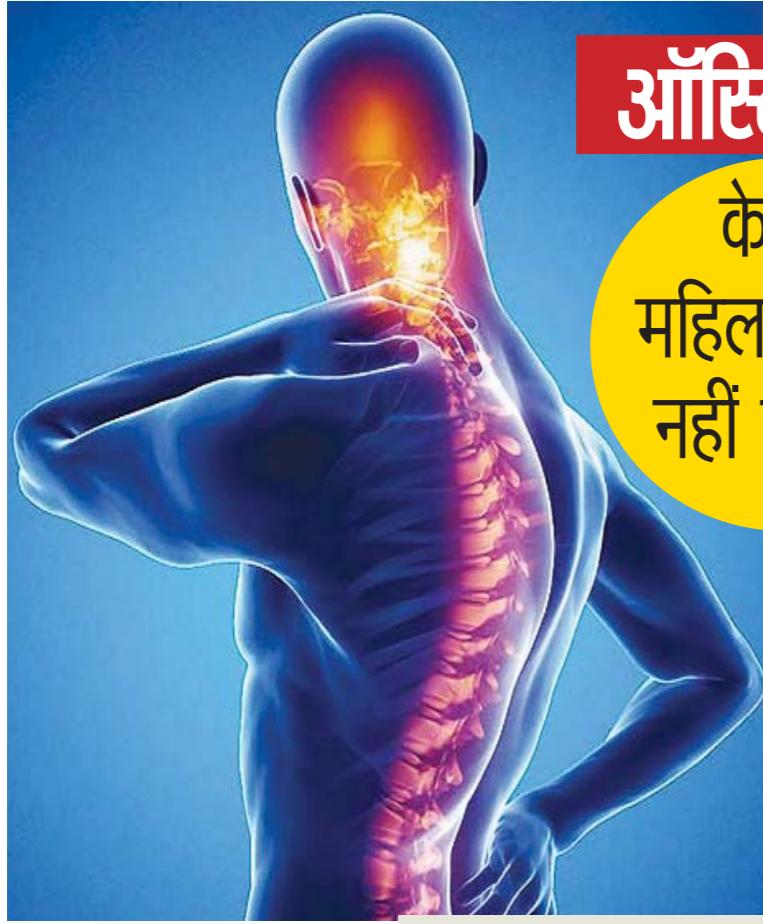
बाइंथा का मौसम वैसे तो इंजॉय करने वाला मौसम होता है लेकिन अकसर यह बीमारियों वाला नौसम सावित हो जाता है। बरसात होने के बाद तपती गर्मी से राहत तो मिलती है लेकिन उमस के कारण इस मौसम में बैक्टीरिया तेजी से बढ़ते हैं। इस कारण इस मौसम में कई बीमारियों फैलती हैं।

बरसात के मौसम में पानी से फैलने वाली बीमारियों का प्रकारप बढ़ जाता है। ऐसे में टीक होने के लिए लोग ऐंटिबायोटिक्स का सहायता लेते हैं। अकसर बिना डॉक्टर की सलाह के ही ऐंटिबायोटिक्स लेते हैं। आप आप भी बीमार पड़ने पर बिना डॉक्टर से पूछे ऐंटिबायोटिक्स दवाओं का खाते हैं तो सावधान हो जाइए। आपको इसका खामियाजा भुगतना पड़ सकता है बिवजह ऐंटिबायोटिक्स का इस्तेमाल आपको अन्य बीमारियों के प्रति असुरक्षित बना सकता है व्योंगि-



इससे कई अच्छे बैक्टीरिया मर जाते हैं। ज्यादा इसरेमाल से शरीर में ऐंटिबायोटिक्स के लिए प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ जाती है। ऐसे में हो सकता है कि जरूरत पड़ने पर शरीर को इसका फायदा न पहुँचे। बेवजह ऐंटिबायोटिक्स खाने से बेहतर होगा कि आप बारिश के मौसम में होने वाली बीमारियों के प्रति जागरूक रहें और उनसे बचने की कोशिश करें।

बेवजह न करें ऐंटिबायोटिक्स का इस्तेमाल



ऑस्टियोपोटोलिस

केवल
महिलाओं को
नहीं होता है

ऑस्टियोपोटोलिस
कैसे होता है?

हमारे जीवनकाल में हॉडिंडों में बदलाव होते रहते हैं: ऊपरी हड्डी की जगह नई हड्डी आ जाती है। और युवराज्या में शरीर वाली हड्डी की जगह भरने के लिए ज्यादा हड्डी

देता है, फिर हमारी हॉडिंडा किसिसी की होती है और मोटी हो जाती है और कंकाल बढ़ा तथा मजबूत होता जाता है। हड्डी की वृद्धि और असन्तोष जीवन के तीसरे दशक में घर पर होता है।

पुरुषों और महिलाओं दोनों में हैन वाली हड्डी की दर नई हड्डी बनने की दर से धीरे-धीरे अधिक होती जाती है। 50 वर्ष की आयु के बाद पुरुषों में हड्डी जल्दी नहीं होती है, जबकि महिलाओं में ज्ञानिकृति के बाद ऐसा होता है।

इसका बढ़ा कारण है गर्भावस्था और स्तननाप के दौरान उत्तरी शरीर में कैलिश्यम की मात्रा कम होना। 65 वर्ष की आयु तक महिलाओं और पुरुषों दोनों में समान दर से हड्डी की क्षति होती है और कैलिश्यम तथा हड्डी के स्थाय के लिए लाभकारी अन्य खनिजों की स्थिति एक समान होती है। आइ आपको बताते हैं और इसे 'शांत रूप' (साइरेट डिजोज) कहा जाता है, याकी इसका कार्ड लक्षण नहीं होता है, जब तक हड्डी न टूट। यह बढ़ती आयु में होता है और बाद की अवस्थाओं में इससे कारण हड्डी की क्षति होती है। आपने आयु के 7वें और 8वें दशक में पूरष इसके लिए अधिक प्रवण होते हैं। याकी किंविकों की छोटी आयु में ऑस्टियोपोटोलिस होती है, तो इसका करण कैसर या गुर्दा का खारब होता है। हालांकि, ऐसे कुछ कारक हैं, जिन पर नियन्यता करने से हड्डी की भरी क्षति से बचा जा सकता है, जो प्राकृतिक रूप से होता है। महिलाओं की तुलना में पुरुषों में ऑस्टियोपोटोलिस पर कम शोषण हुआ है, लेकिन यदि हर कोई कुछ रोकथामपक्क उपाय करे, तो हड्डी की ताकत बनी रहेगी।

- स्वास्थ्यकारी आहार लें, जिसमें प्रधान विटामिन 'डी' अच्युती तसा (विटामिन 'डी' वाला घुल जाता है) और कैलिश्यम हो।
- नियमित व्यायाम और शरीर का भार उठाना। ऐसी गतिविधियां में तेज चलना, जॉगिंग और आटडोर स्पोर्ट्स शामिल हो सकती हैं।
- दिनभर सक्रिय रहें। आलस्य वाली जीवनशैली तंदूरस्ती की श्रृंखला में हॉडिंडों की मात्रा बढ़ावी की शर्मिन है।
- धूम्रपान छोड़ें और शरब का अत्यधिक सेवन न करें।
- हड्डी के बनते की नियमित जांच कराएं।

अमोल नाईकावाडी

आंस्टियोपोटोलिस (अस्थि-सुषिरिता) में हॉडिंडों परती हो जाती है, जिससे वे धीरे-धीरे कंकाल भरने लगती हैं, उनकी शक्ति समाप्त हो जाती है और सामान्य हॉडिंडों की तुलना में वे सरलता से टूट जाती हैं। यह रोग लालों उम्र दरान मिलियाओं और पुरुषों को होता है। महिलाओं के गिरने पर उनकी हॉडिंडा, टूटने के लिये दोनों प्रवण होती हैं, लेकिन ऑस्टियोपोटोलिस पुरुषों को खासगत यदि वह 80 और 90 वर्ष की आयु में हो। ऑस्टियोपोटोलिस को अस्सर महिलाओं का रोग माना जाता है, इस कारण पुरुषों के संदर्भ में इस धातव रोग पर ध्यान नहीं दिया जाता है, लेकिन पुरुष भी इसके लिए प्रवण होते हैं। सेटर फॉर डिवर्ज कॉटेल के अनुसार, यह सच है कि बुद्ध पुरुषों को बुद्ध महिलाओं की तुलना में अधिक फॉक्चर होता है, लेकिन पुरुष इस रोग के कारण स्थायी विकलांगता के लिए अधिक प्रवण होते हैं और महिलाओं की तुलना में इस रोग से दोगुने पुरुषों की मृत्यु हो सकती है।

■ स्वास्थ्यकारी आहार लें, जिसमें प्रधान विटामिन 'डी' अच्युती तसा (विटामिन 'डी' वाला घुल जाता है) और कैलिश्यम हो।

■ नियमित व्यायाम और शरीर का भार उठाना।

ऐसी गतिविधियां में तेज चलना, जॉगिंग और आटडोर स्पोर्ट्स शामिल हो सकती हैं।

■ दिनभर सक्रिय रहें।

आलस्य वाली जीवनशैली तंदूरस्ती की श्रृंखला में हॉडिंडों की मात्रा बढ़ावी की शर्मिन है।

■ धूम्रपान छोड़ें और शरब का अत्यधिक सेवन न करें।

■ हड्डी के बनते की नियमित जांच कराएं।

